बहुत गयी अब थोड़ी रही
थोड़ी की भी थोड़ी बची
वक्त है कम कहती है घडी
जाना है अब अपने घर
संगम को कर न निष्फल
हर सेकण्ड का यहाँ है मोल
मिला है सुंदर बनने का रोल
हर स्वांश में ले प्रभु का नाम
बन जायेंगे बिगड़े सब काम
छोड़ सब दुनियाँ के अब झमेले
जाना है तुझको बिलकुल अकेले
सब यहाँ का यहाँ ही रह जायेगा
पाप पुण्य का खाता ही संग जायेगा
पल पल है भाग्य बनता इस वक्त
बनना है देव आत्मा जो था भक्त
कल्प कल्प का खेल यह चलता
कर न अब कोई भी गफलत
देख संसार की क्या हो गयी हालत
ब्राह्मण जीवन मिला कर उसकी कद्र
हीरा जन्म फिर नही मिलेगा
दुर्लभ है कोटो में कोई को

चुनता है प्यारा भगवन
वक्त की सुई दे रही दस्तक
रेडी हो जा लगा विजय का तिलकतख़्त
ताज़ लिये खड़े प्रभु तेरे मस्तक
कर अरमान पूरे भगवान के
बनायेगा तुझे वो विश्वमहाराजन
कर श्रेष्ठ कर्मो से उनको नमन
पूरे होंगे तेरे अधूरे सारे स्वपन

ॐ शांति!!